ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 48 कुल पृष्ठ-8 28 सितम्बर से 4 अक्टूबर, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 श्रा. कृ.-10

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती के उपलक्ष में

विशाल आर्य महासम्मेलन, खटकड़ टोल, जिला-जीन्द, हरियाणा भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

यह आर्य महासम्मेलन आर्य समाज के भविष्य के लिए होगा मील का पत्थर

महासम्मेलन में पारित किये गये महत्त्वपूर्ण प्रस्तावों का हजारों लोगों ने हाथ उठाकर किया समर्थन

स्वामी दयानन्द जी ने किसानों को राजाओं का राजा बताया था - स्वामी आर्यवेश

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों की आज अत्यन्त आवश्यकता है - चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा

मेरी चार पीढ़ी आर्य समाज की विचारधारा से प्रेरित रही है - किरणजीत सिंह सिन्धु

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती के कार्यक्रमों की श्रृंखला में आयोजित हरियाणा प्रान्तीय विशाल आर्य महासम्मेलन, खटकड़ टोल, जिला-जीन्द, की ऐतिहासिक धरती पर जोश-खरोश एवं उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। यह महासम्मेलन अभूतपूर्व था और तब तक हरियाणा में आयोजित हुए आर्य समाज के अन्य सम्मेलनों की उपस्थिति, व्यवस्था एवं अनुशासन की दृष्टि से अभूतपूर्व रहा। पूरे प्रेदश के कोने-कोने से हजारों की संख्या में आर्यजन केसरिया पगड़ी बांधकर तथा हाथों में ओ३म् पट्ट लेकर सम्मेलन में सम्मिलित हुए। उमड़ते हुए जन-सैलाब को देखकर सभी लोग आयोजकों को बधाई एवं शुभकामनाएं दे रहे थे। खटकड़ टोल के साथ लगभग 9 एकड़ जमीन पर बसाये गये महर्षि दयानन्द नगर का दृश्य देखते ही बनता था। सैकड़ों ओ३म् के झण्डे आकाश में लहराते हुए आर्य समाज के उज्जवल भविष्य का संकेत दे रहे थे। महर्षि दयानन्द नगर में महापुरुषों के चित्र एवं जीवन मृत्यु से युक्त आकर्षक प्रदर्शनी के अतिरिक्त सैकड़ों होर्डिंग, कआउट तथा बैनर लगाये गये थे। जिससे पूरे दयानन्द नगर की शोभा को चार चांद लग रहे थे। शुद्ध देशी घी से निर्मित भोजन की व्यवस्था अत्यन्त प्रशंसनीय रही और लोगों ने ऋषि लंगर में भोजन का भरपूर आनन्द उठाया। साहित्य विक्रेताओं, ओ३म् ध्वज, यज्ञ कुण्ड तथा विविध आर्य प्रतीक चिन्हों के स्टाल लोगों की भीड़ को खूब आकर्षित कर रहे थे।

कार्यक्रम बस्ती से आधा किलोमीटर दूर खेतों में था। अतः प्रत्येक व्यक्ति की जबान से एक ही शब्द सुनने को मिल रहा था कि जंगल में मंगल कर दिया। लोग इसके लिए स्वामी रामवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, श्री रणधीर सिंह रेढू एडवोकेट, श्री सज्जन सिंह राठी, श्री अशोक आर्य एवं उनकी पूरी टीम को बधाई देते हुए मुक्त कंठ से प्रशंसा करके अपने कर्त्तव्य का निर्वहन कर रहे थे। खटकड़ गांव के हजारों स्त्री-पुरुष, नवयुवक आगन्तुक लोगों की सेवा एवं व्यवस्था में अपनी पलके बिछाये हुए अथक परिश्रम कर रहे थे। चहुँ ओर हर्षोल्लास एवं उत्साह का वातावरण व्याप्त था। लगभग डेढ़ एकड़ जमीन पर बने विशाल पंडाल में मंच की भव्यता देखते ही बनती थी। एक तरफ आर्य समाज के कासाय वस्त्रधारी संन्यासी एवं वानप्रस्थी मंच पर शोभायमान थे तो दूसरी तरफ आर्य समाज के प्रतिष्ठित भजनोपदेशक एक अलग मंच से अपने गीतों के स्वर लहरी से उपस्थित जन समूह को महर्षि के जीवन एवं कार्यों के सम्बन्ध में प्रेरित कर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्य समाज किसान, मजदूर एवं महिलाओं के सम्मान के लिए संघर्ष करता रहेगा – प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्य समाज की स्थापना मानवता के कल्याण के लिए की गई थी – पं. माया प्रकाश त्यागी

आर्य समाज को सामयिक समस्याओं के विरुद्ध आन्दोलन करना चाहिए– स्वामी ओमवेश

महर्षि के सपनों का भारत बनाना हमारा लक्ष्य है – स्वामी रामवेश

रहे थे। बीच के मुख्य मंच पर आमंत्रित मुख्यअतिथि, विशिष्ट अतिथि, प्रमुख वक्ता तथा गणमान्य अतिथि विराजमान थे। इस मंच पर लगभग 150 प्रतिष्ठित लोग विराजमान थे। मंच के सामने प्रेस गैलरी बनाई गई थी जिसमें प्रिंट मीडिया, सोशल मीडिया तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया के पचासों प्रतिनिधि, संवाददाता तथा कैमरामैंन कार्यक्रम को अपने कैमरे में संजो रहे थे।

इस महासम्मेलन का शुभारंभ प्रातः 9 बजे यज्ञ से हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पद पर सुदूर अमेरिका स्थित वहां की प्रथम आर्य समाज न्यूयार्क के धर्माचार्य एवं गुरुकुल झज्जर के स्नातक डॉ. अमरजीत शास्त्री ने सुशोभित किया। इस महासम्मेलन के लिए उन्हें विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। उनका सहयोग आर्य समाज के युवा विद्वान् और सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के बौद्धिक अध्यक्ष डॉ. श्यामदेव आचार्य, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् की महामंत्री कुमारी एकता आर्या आदि ने किया। यजमान के रूप में खटकड़ के सरपंच और महासम्मेलन के विशेष सहयोगी रिटायर्ड थानेदार श्री सत्यवीर जी महासम्मेलन के लिए जमीन उपलब्ध कराने वाले श्री मांगेराम जी तथा श्री सुरेश कुमार जी सपत्नीक यजमान बनें।

इस पूरे महासम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ ब्रह्मा एवं यजमानों को ओ३म् पट्ट पहनाकर सम्मानित किया तथा उनका धन्यवाद ज्ञापित किया। यज्ञ के उपरान्त ध्वजारोहण का कार्यक्रम 10.15 बजे आयोजित हुआ तथा आर्य समाज हिसार के यशस्वी प्रधान और हरियाणा के पूर्व मंत्री चौ. हरि सिंह सैनी की ओर से उनके सुयोग्य सुपुत्र और आर्य समाज हिसार के कार्यकारी प्रधान श्री देवेन्द्र सैनी ने अपने कर–कमलों से सम्पन्न किया। उनका सहयोग महासम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी, आयोजन समिति के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश तयागी जी, सरदार भगत सिंह जी के भतीजे श्री किरणजीत सिंह जी सिन्धु, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य आदि ने किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने संक्षिप्त उद्बोधन के द्वारा ओ३म् ध्वज की महिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि परमपिता परमेश्वर के नाम से अंकित यह ओ३म् ध्वज हमें प्रेरित कर रहा है कि पूरा विश्व उस ईश्वर का एक परिवार है। उसके उपकार के लिए आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने की थी। आज ईश्वर को साक्षी मानकर संकल्प करें कि जिस प्रकार से अग्नि तेज से ओत–प्रोत होती है, उसी प्रकार से हम भी तेज तथा ओज से ओत–प्रोत होकर दुनिया में अवांछित व्यवस्थाओं को ध्वस्त करके एक नई व्यवस्था लागू करने के लिए कार्य करें। उस नई व्यवस्था में जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, धार्मिक अन्धविश्वास एवं महिला उत्पीड़न एवं अत्याचार तथा किसी भी प्रकार के शोषण का कोई स्थान न हो। यह आर्य महासम्मेलन इस दिशा में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा, इस आशा और विश्वास के साथ इस ध्वजारोहण के द्वारा सम्मेलन का उद्घाटन किया जा रहा है।

ध्वजारोहण के उपरान्त मुख्य मंच से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ और इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन आर्य समाज के तेजस्वी युवा संन्यासी सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री स्वामी आदित्यवेश जी ने किया। विदित हो कि इस महासम्मेलन को विशाल रूप देने में स्वामी आदित्यवेश जी ने गत् एक माह से दिन–रात मेहनत की है। जन–सम्पर्क किया है तथा इसको सफल बनाने के लिए अपनी प्रमुख भूमिका निभाई है। उन्हीं के संयोजन में सम्मेलन की तैयारी एवं सभी व्यवस्थाओं का कार्य गत् एक माह से किया जा रहा है। स्वामी आदित्यवेश जी ने बड़ी कुशलता और जागरूकता के साथ इस भव्य मंच का संचालन करके अपनी प्रतिभा एवं योग्यता का परिचय देते हुए हजारों आर्यजनों के मन पर अमिट छाप छोड़ी है।

सर्वप्रथम श्री सुनील शास्त्री के जोशीले भजनों से कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया और उसके पश्चात् वक्ताओं के व्याख्यान प्रारम्भ हुए। व्याख्यानों के बीच भजनों का कार्यक्रम भी चलता रहा। भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के अध्यक्ष श्री सहदेव बेधड़क, विख्यात विदुषी बहन कल्याणी आर्या, ओजस्वी युवा भजनोपदेशक श्री सुनील शास्त्री, महात्मा योगश्वर मुनि, श्री गुरनाम सिंह आर्य आदि के भजनों से श्रोता लाभान्वित होते रहे।

इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए आचार्या दर्शना जी ने कहा कि मैं आज शहीदों को नमन करते हुए देव दयानन्द जी को याद करते हुए कहना चाहती हूं कि सर्वप्रथम महर्षि ने ही महिलाओं की आवाज उठाई और महिलाओं को उनका हक दिलाया। आज हम उन्हें नमन करते हैं। आर्य समाज संगठन सबसे पहले महिलाओं का वंदन करते हुए अनेक क्षेत्रों में आगे बढ़ाने का कार्य किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने ही महिलाओं को पढ़ने–लिखने का अधिकार दिलवाया तथा विधवाओं को पुनर्विववाह का हक दिलाया।

श्री सुभाष गांगुली जी ने कहा कि आर्य समाज के विचारधारा पर कोई सरकार कार्य करने वाली रही तो वह चौधरी भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी के नेतृत्व वाली सरकार रही है। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रचार–प्रसार पर विशेष जोर दिया और कहा कि आर्य समाज को प्रत्येक गांव में घर–घर जाकर आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं स्वामी दयानन्द जी के सन्देश को पहुंचाना चाहिए।

श्री हवा सिंह हुड्डा जी ने कहा कि पूरे हरियाणा में आर्य समाज का बोलबाला है। आज के मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी भूपेंद्र सिंह हुड्डा जी का पूरा परिवार आर्य विचारधारा से प्रेरित रहा है और चौधरी भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी स्वयं आर्य समाज के विचारों से प्रभावित होकर आमजन के लिए कार्य करते रहे हैं।

श्री सतबीर पहलवान प्रधान खेड़ा खाप एवं किसान नेता ने कहा कि आज मैं महर्षि की 200वीं जन्म जयंती के अवसर पर भाई–चारे की बात कहते हुए यह कहना चाहता हूं कि नफरत फैलाने बालों का सभी लोग बहिष्कार करें और आर्य समाज के साथ कन्धे से कंधा मिलाकर कार्य करें। यदि सभी समाज की उन्नति के लिए कार्य करेंगे तो देश खुशहाल होगा और स्वामी दयानन्द जी महाराज का सपना साकार होगा।

श्री आजाद सिंह पालवां ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने समाज की उन्नति के लिए और ऊंच–नीच के भेदभाव को खत्म करने का कार्य किया। ऐसे ऋषि का आज हम 200वाँ जन्म जयन्ती मना रहे हैं। वह ऋषि देशभक्त क्रांतिकारियों के मसीहा थे, किसानों को उन्होंने राजाओं का राजा बताया था और वर्तमान में भी किसान आंदोलन का साथ आर्य समाज ने दिया इसके लिए मैं ऊँचाना के किसान संघ की ओर से आर्य समाज और स्वामी आर्यवेश जी महाराज का धन्यवाद करता हूँ।

डॉ. सुमेर सिंह जी, नारनौल ने कहा कि आज हम महान् विभूति की 200वीं जन्म जयंती मनाने के लिए इकट्ठा हुए हैं तो आज कहना चाहता हूँ कि सभी के लिए समान शिक्षा की बात अवश्य होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी सभी के लिए समान शिक्षा की बात करते थे। आपस में मिलकर रहने की बात किया करते थे।

केंद्रीय आर्य युवक परिषद् करनाल के मंत्री प्रो. आनन्द सिंह आर्य जी ने इस महासम्मेलन में पारित प्रस्ताव का समर्थन करते हुए अपना सुझाव देते हुए कहा कि इसमें देव दयानन्द जी के निर्वाण दिवस को भी जोड़ने का कष्ट करें तो अच्छा होगा।

मकड़ौली के पूर्व सरपंच श्री सुमित आर्य ने कहा कि आज मुझे दुःख के साथ कहना पड़ रहा कि धीरेंद्र शास्त्री जैसे लोगों को दान नहीं मांगना पड़ता है, परन्तु वैदिक धर्म के प्रचार के लिए दान मांगनी पड़ती है। इसलिए अपनी तिजोरी खोल दें। उन्होंने कहा कि आर्य समाज सच के साथ खड़ा होने वाला संगठन है।

वक्ताओं की श्रृंखला में अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत करते हुए विश्व विख्यात युवा विद्वान् डॉ. अमरजीत शास्त्री ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर विशद प्रकाश डाला और स्वयं को संकल्पबद्ध करते हुए घोषणा की कि जब तक एक भी श्वांस शरीर में रहेगा तब तक महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करता रहूंगा। उन्होंने स्वामी आर्यवेश जी को आश्वस्त करते हुए यह भी घोषाण की कि प्रतिवर्ष 51 हजार रुपये आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए देते रहेंगे।

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान और देश के जाने–माने विद्वान् आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जिन विचारों को मानते और मनवाते थे आज उन विचारों को पुनः प्रखरता के साथ प्रसारित करने की आवश्यकता है। उदाहरण स्वरूप स्वामी दयानन्द अवतारवाद को नहीं मानते थे किन्तु वर्तमान समय में विविध देवी–देवताओं की भरमार है तथा नये–नये अवतारों को प्रतिष्ठित करने की कोशिश की जा रही है। आर्य समाज को ऐसी प्रवृत्तियों के खिलाफ जागरूक होना चाहिए। उन्होंने आर्य जनता का आह्वान किया कि वैदिक संस्कृति तथा वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जायें।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान और संघर्षशील नेता श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने बढ़ते हुए धार्मिक अन्धविश्वास और पाखण्ड को सबसे बड़ी चुनौती बताया और उन्होंने आर्य युवकों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे पाखण्ड के विरुद्ध जन–चेतना प्रारम्भ करें।

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के राजनीतिक सलाहकार एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के पूर्व महामंत्री वैदिक विद्वान् प्रो. वीरेन्द्र ने सारगर्भित व्याख्यान में कहा कि आर्य समाज की स्थापना के समय धार्मिक, सामाजिक क्षेत्र में जितना अन्धविश्वास, पाखण्ड, अन्याय एवं असमानता थी, आज उससे कहीं अधिक बढ़ी हुई है। अतः आर्य समाज की प्रासंगिकता तथा आवश्यकता भी आज पहले से अधिक अनुभव की जा रही है। लोग आर्य समाज की ओर दृष्टि लगाये बैठे हैं, क्योंकि धार्मिक अन्धविश्वास तथा सामाजिक अन्याय के विरुद्ध अन्य कोई संस्था या संगठन आवाज नहीं उठा सकता।

महासम्मेलन के मुख्य संयोजक स्वामी आदित्यवेश ने बड़े जोश–खरोश के साथ घोषणा की कि यह महासम्मेलन अभूतपूर्व है। अब तक आयोजित हुए अपने सभी सम्मेलनों तथा आयोजनों का हमने रिकॉर्ड तोड़ दिया है और एक नया मील का पत्थर इस महासम्मेलन के माध्यम से स्थापित किया है। इस महासम्मेलन की उपस्थिति, भोजन व्यवस्था, अनुशासन, पण्डाल, मंच तथा पार्किंग आदि के प्रबन्ध से यह उपस्थित जन समूह बेहद प्रसन्न तथा संतुष्ट है। उन्होंने लोगों से हाथ उठवाकर सम्मेलन की व्यवस्थाओं के बारे में समर्थन मांगा तो लोगों ने दोनों हाथ उठाकर तालियां बजाकर उनकी बात का समर्थन किया।

इस सम्पूर्ण आयोजन के लिए बनाई गई महर्षि दयानन्द द्वि जन्म शताब्दी आयोजन समिति हरियाणा के अध्यक्ष एवं त्यागी, तपस्वी संन्यासी पूज्य स्वामी रामवेश जी महाराज ने अपने आशीर्वचनों से उपस्थित जन समूह का अभिवादन किया तथा आयोजन समिति के सभी अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को सम्मेलन की सफलता के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों का भारत बनाने के लिए हम सभी को आज कृत–संकल्प होना चाहिए और गांव–गांव में आर्य समाजों की स्थापना करनी चाहिए।

संर्घषशील, तेजस्वी एवं ओजस्वी संन्यासी चांदपुर जिला–बिजनौर के विधायक पूर्व गन्ना मंत्री स्वामी ओमवेश जी ने आर्य समाज के कर्णधारों तथा आर्य जनता का आह्वान किया कि हमें सामयिक समस्याओं के विरुद्ध देश में आन्दोलन करने चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की पहचान स्वतंत्रता आन्दोलन, हैदराबाद आन्दोलन, हिन्दी आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन, शराबबन्दी आन्दोलन, किसान आन्दोलन आदि के कारण है। जब आर्य समाज आन्दोलन करता था तो देश की आम जनता आर्य समाज के झण्डे के नीचे एकत्रित हो जाती थी। जबसे हमने आन्दोलन करने बन्द किये तो आर्य समाज उदासीनता से ग्रसित होने लगा। किन्तु हम आशावादी हैं, हमें फिर से वर्तमान के ज्वलन्त मुद्दों पर देश की जनता का नेतृत्व करना चाहिए। उन्होंने हजारों लोगों को शपथ भी दिलवाई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के कोषाध्यक्ष एवं इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। उन्होंने आर्य समाज के कार्य को गति प्रदान करने के लिए युवकों को आगे आने की प्रेरणा दी।

आर्य महासम्मेलन खटकड़ टोल, जीन्द अभूतपूर्व है – स्वामी आदित्यवेश

आर्य समाज की प्रासंगिता एवं आवश्यकता पहले से भी अधिक है – प्रो. वीरेन्द्र

पाखण्ड और अन्धविश्वास के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलना चाहिए – बिरजानन्द एडवोकेट

जीवन के आखिरी श्वांस तक महर्षि दयानन्द के मिशन के लिए कार्य करता रहूंगा – डॉ. अमरजीत शास्त्री

वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए आर्य जन कमर कस लें – प्रेमपाल शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री और महासम्मेलन के विशिष्ट अतिथि प्रो. विट्ठलराव आर्य ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज किसान, मजदूर, महिलाएं तथा समाज के दबे–कुचले एवं शोषित वर्ग के लिए प्रारम्भ से ही संघर्ष करता आ रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती के अवसर पर हम सभी को यह संकल्प लेना होगा कि भविष्य में भी हम समाज के उत्थान के लिए और वंचित, शोषित, पीड़ित, दलित, आदिवासी, महिलाओं, किसानों आदि के लिए संघर्ष करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का कार्यक्रम तथा उद्देश्य वैश्विक है। संकीर्णता आर्य समाज से कोषों दूर है, इसलिए हमें मानव मात्र के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए।

इस अवसर पर महासम्मेलन के अध्यक्ष और सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने 12 सूत्री प्रस्ताव समारोह में प्रस्तुत करते हुए हरियाणा तथा केन्द्र सरकार से आग्रह किया कि इन प्रस्तावों पर गम्भीरता से विचार करके इन्हें क्रियान्वित किया जाये तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जन्म जयन्ती के पर्व पर महर्षि की स्मृतियों को स्थाई रूप दिया जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने केन्द्र सरकार से अपील की कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की स्मृति में दिल्ली के समीप जेवर (अलीगढ़) में निर्माणाधीन अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नाम से घोषित किया जाये। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म स्थान टंकारा (गुजरात) और निर्वाण स्थली भिनाय कोठी (अजमेर) को विकसित करके अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक का रूप दिया जाये। देश की राजधानी दिल्ली में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नाम से एक स्मारक संग्रहालय स्थापित किया जाये जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज की स्वतंत्रता आन्दोलन, हैदराबाद मुक्ति आन्दोलन एवं देश के नव–जागरण एवं नव–निर्माण तथा समाज सुधार के कार्यों से जुड़ी हुई समस्त गतिविधियों, भारत के संसद भवन में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का तैलीय चित्र स्थाई रूप से स्थापित किया जाये, चित्रों, दस्तावेजों तथा किताबों का संग्रह हो। स्वामी आर्यवेश जी ने इस प्रस्ताव के अतिरिक्त 11 अन्य प्रस्ताव भी महासम्मेलन में पढ़कर सुनाये जो दूसरे पृष्ठ पर प्रकाशित किये गये हैं। इन प्रस्तावों को उपस्थित जन समूह ने गगनभेदी नारों के साथ और दोनों हाथ उठाकर अपना समर्थन देते हुए पास कराया।

स्वामी आर्यवेश जी ने हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और इस महासम्मेलन के मुख्य अतिथि चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि हुड्डा साहब की विरासत आर्य समाज से जुड़ी है। इनकी तीन पीढ़ी आर्य समाजी थी। इनके दादा स्व. चौ. मातूराम तथा स्व. डॉ. रामजीलाल आर्य, इनके पूज्य पिता स्व. चौ. रणवीर सिंह पक्के आर्य समाजी थे और ये स्वयं भी प्रारम्भ से ही आर्य समाज के प्रबल सहयोगी एवं समर्थक रहे हैं। आज हमने उनको इस महासम्मेलन में आमंत्रित करने का निर्णय उनकी आर्य सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण से ही किया। स्वामी जी ने हुड्डा साहब को याद दिलाते हुए कहा कि हरियाणा में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस 12 फरवरी की आपने छुट्टी लागू की थी, किन्तु बाद में प्रदेश की वर्तमान सरकार ने छुट्टी निरस्त कर दी। हम चाहते हैं कि यदि आपको सत्ता में आने का अवसर मिले तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस 12 फरवरी की छुट्टी अवश्य लागू की जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर जहां मुख्य अतिथि चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी का जोरदार स्वागत किया और उनके सिर पर पगड़ी पहनाई वहीं शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे श्री किरणजीत सिंह सिन्धु तथा प्रो. वीरेन्द्र को भी पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया।

अपने उद्बोधन में श्री किरणजीत सिंह सिन्धु ने भावुकतापूर्ण शब्दों में बताया कि उनकी चार पीढ़ी आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित एवं प्रेरित रही है। उनके परदादा सरदार अर्जुन सिंह जी ने स्वयं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से यज्ञोपवीत धारण की थी तथा मेरे दादा सरदार किशन सिंह (शहीदे आजम भगत सिंह के पिता) जी भी आर्य समाज के विचारों का प्रचार–प्रसार किया करते थे। किरणजीत सिंह जी ने बताया कि हमारे परिवार में आर्य समाज का प्रभाव होने के बाद किसी भी प्रकार का नशा, मांसाहार, अन्धविश्वास या पाखण्ड नहीं रहा और एक शुद्ध आर्य परिवार के रूप में हमारे पूर्वज विख्यात हुए। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी के दूसरी जन्म शताब्दी पर हम सभी उनके दिखाये रास्ते पर चलें और अपने देश को उन्नति की ओर ले जायें। जात–पांत, छूआ–छात या किसी भी प्रकार का भेदभाव आर्य समाज के विचारों के विपरीत है। धर्म पर के नाम पर पाखण्ड और अन्धविश्वास वेद के विरुद्ध है। अतः हम सभी को इन कुरीतियों के विरुद्ध प्रचार–प्रसार करनी चाहिए यही महर्षि दयानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

महासम्मेलन के मुख्य अतिथि चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी ने अपने भाषण में जहां उपस्थित जनसमूह का अभिवादन किया वहीं उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की प्रमुख घटनाओं पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मेरे परिवार की चार पीढ़ी आर्य समाज से जुड़ी रही है। और मैं आर्य समाज को देश की आजादी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली संस्था मानता हूँ। इतना ही नहीं बल्कि समाज में फैली हुई कुरीतियों, अन्धविश्वास एवं जातिवाद जैसी बुराईयों के विरुद्ध अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाएं एवं उनके सिद्धान्त हमारे लिए और समाज के लिए उतने ही उपयोगी हैं। उन्होंने कहा कि जैसा स्वामी आर्यवेश जी ने कहा है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस 12 फरवरी की छुट्टी पुनः लागू की जाये तो मैं इतना ही कह सकता हूं कि यदि ईश्वर ने हमारी पार्टी को सत्ता सौंपी और मुझे सेवा करने का अवसर मिला तो मैं अवश्य ही महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिन की छुट्टी लागू करूंगा। उन्होंने बताया कि जब मैं मुख्यमंत्री बना था तो शपथ लेने के लिए जो दिन निश्चित किया गया था वह शनिवार का दिन था। हमारे कुछ साथियों ने कहा कि ये तो शनिवार का दिन है यह शुभ नहीं होगा किन्तु मैंने उनसे यह कहा कि तुम्हें यह पता नहीं है यह दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिन भी है इसलिए मैं इसी दिन ही शपथ लूंगा और मैं स्वामी दयानन्द जी के जन्मदिन पर शपथ ली थी। उन्होंने आगे कहा कि केवल जन्मदिन की छुट्टी ही घोषित नहीं की जायेगी बल्कि महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं को पढ़ाने के लिए भी कार्य किया जायेगा। मैं भली प्रकार मानता हूं और जानता हूं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती समाज के सभी वर्गों और समुदायों के हितैषी थे, वे सबका उपकार और कल्याण करने की भावना रखते थे, ऐसे महर्षि के सिद्धान्तों को प्रचारित–प्रसारित करने में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

इस अवसर पर सर्वश्री चौ. हरि सिंह सैनी, चौ. लाजपत राय करनाल, श्री हरिकेश राविश एडवोकेट कैथल, श्री दयानन्द शास्त्री टिटौली रोहतक, श्री चन्द्रभान आर्य मितरौल पलवल (अमेरिका) तथा कन्या गुरुकुल खरल की आचार्या डॉ. दर्शना कुमारी को आर्य गौरव सम्मान से विभूषित किया गया। उनके अतिरिक्त किसान आन्दोलन में शहीद हुए किसान परिवारों को किसान योद्धा सम्मान से सम्मानित किया गया।

मंच पर उपस्थित जिन गणमान्य अतिथियों को सम्मानित किया गया उनमें सर्वश्री सतवीर पहलवान अध्यक्ष खेड़ा खाप एवं खटकड़ टोल किसान आन्दोलन, श्री आजाद सिंह पालवां युवा किसान नेता, श्रीमती सिक्किम श्योकंद, डॉ. कविता सरपंच, श्री जय प्रकाश खटकड़, श्री अमरजीत खटकड़ सहित 50 महानुभावों को किसान योद्धा सम्मान से सम्मानित किया गया।

इस महासम्मेलन पर सर्वश्री स्वामी यज्ञमुनि जी, स्वामी विजयवेश जी, बहन मुकेश आर्या, चन्द्रभान आर्य (अमेरिका), भंवरलाल आर्य (जोधपुर), दलपत सिंह आर्य, हरदेव आर्य, श्रीमती सिक्किम श्योकंद, बाबूलाल आर्य जूई, सुरेंद्र गुप्ता, शालिनी गुप्ता (शक्ति नगर दिल्ली), चंद्र प्रकाश मलिक, ओम प्रकाश (भिवानी), वेदपाल (लोवा माजरा), पूर्व सांसद महेद्र सिंह मलिक, पूर्व विधायक सुखबीर फरमाना, अमित मान, मधुबाला शास्त्री (पानीपत), मधुर प्रकाश (दिल्ली), बबलू पंचकुला, नफेसिंह आर्य, राजेश आर्य, मनोज पहलवान फरमाना, नरेंद्र श्योकंद, सूबे सिंह आर्य, मनीराम गोयल, महात्मा समशेर पुनिया अध्यक्ष पुनिया खाप, मलिक खाप के अध्यक्ष मलिक राज मलिक, सरपंच एसोसिएशन उचाना तथा जींद के अध्यक्ष, अमीर सरपंच मोहनगढ़, सतबीर सरपंच उचाना कलां, रोशनी देवी, सोमी दुर्जनपुर, बिजेंद्र बुरा, पवन, नरेश आर्य घोघड़िया, विक्रम कोच, वेद प्रकाश आर्य, गुरुकुल सिंहपुरा, बलराम गंगाना, पवन आहुलाना, आर्य सुरेश, उपाध्यक्ष, जिला परिषद् पानीपत, योगेंद्र आचार्य, राजेंद्र आचार्य, स्वामी ब्रह्मानंद, सत्यवीर शास्त्री तथा अन्य कार्यकर्ता गुलाढी, सूरजमल, भंवरलाल आर्य, हरि सिंह आर्य, हरदेव आर्य, वीरेन्द्र मेहता, मदन गोपाल, शिवजी सोनी, राजस्थान, महासिंह सरपंच कोथ,दिलबाग शास्त्री, मनुदेव शास्त्री, मनोज आर्य, जयवीर आर्य, बलवंत आर्य सीसर, बलवंत न्याना, प्रिया आर्या करनाल, दिलबाग घरौंडा, राजबीर वशिष्ठ, जिले सिंह, डॉ. नारायण सिंह, पाणिनी आर्य, नरेश टिटौली, राजेश आर्य खिडवाली, सुनीता खासा, सुषमा, अर्जुन सिंह पूर्व डीएसपी, वीरेंद्र घोघड़ियां, दिलबाग संडील आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

इस महासम्मेलन की सफलता में जिन–जिन सहयोगियों ने अथक परिश्रम किया उनमें सर्वश्री दलबीर आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, श्री रामनिवास आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, बाबूलाल आर्य जूई भिवानी, श्री दलवीर आर्य हिसार, श्री जगदीश सींवर सिरसा, चौ. अजीत सिंह पूर्व विधायक झज्जर, प्रिं. आजाद सिंह, राष्ट्रीय उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, एवं श्री बलराम आर्य सोनीपत, श्री जयपाल आर्य एवं डॉ. होशियार सिंह राजौन्द, श्री सतबीर आर्य एवं श्री श्यामलाल आर्य कैथल, पहलवान सुरेन्द्र आर्य बाड़ला, प्रो. आन्नद सिंह आर्य एवं बहन प्रिया आर्या करनाल, बहन प्रवेश आर्या एवं आर्य समाज फरमाणा रोहतक, सज्जन सिंह राठी कार्यकारी अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, अशोक आर्य प्रदेश महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, धर्मवीर गोईयां, प्रदेश अध्यक्ष, लोक शक्ति मंच, रणवीर सिंह एडवोकेट राष्ट्रीय प्रवक्ता नरवाल खाप, हरपाल आर्य प्रान्तीय कोषाध्यक्ष, प्रदीप कुमार प्रान्तीय प्रवक्ता, जयपाल आर्य प्रान्तीय उपाध्यक्ष, ऋषिराज शास्त्री प्रान्तीय उपाध्यक्ष, अजयपाल आर्य प्रान्तीय उपाध्यक्ष, राजदेव आर्य प्रान्तीय उपाध्यक्ष, देवेन्द्र सहारण, जगफूल ढिल्लों, सतबीर सरपंच, सतबीर पहलवान, मांगेराम थानेदार, जय प्रकाश खटकड़, अक्षर लाठर, रघुबीर बूरा, योगेस्वर मुनि, सत्यवान कौशिक, टेकराम सरपंच, सूरजमल पहलवान, सोमवीर पहलवान, मनीष आर्य, श्रवण कुमार आर्य, आशीष सिवाच, अजीत गौतम, वीरेन्द्र पहलवान, प्रो. धर्मवीर, कर्मपाल आर्य, सूरजमल आर्य, धुलाराम आर्य, महासिंह सरपंच, इन्द्रजीत आर्य, अनिल आर्य, मनजीत कालवा, केवल सिंह आर्य, आचार्य सूर्यदेव, दयानन्द आर्य, डॉ. राजपाल आर्य, कर्ण सिंह रेढ़ू, सुबेर सिंह, रणबीर राठी, आशीष्र एडवोकेट, संदीप बुढायन, धर्मेन्द्र पहलवान, विष्णुपाल, अशोक वशिष्ठ, अवनीश आर्य, उत्तम आर्य, जिले सिंह आर्य, अरुण ठाकरान, सोमवीर पहलवान, धर्मेन्द्र सरपंच, डॉ. विवेकानन्द शास्त्री, डॉ. श्यामदेव आर्य, अर्जुन सिंह पूर्व डी.एस.पी., सतपाल सरपंच, सहसरपाल आर्य, सोनू आर्य, आजाद सिंह पूनिया, सुरेन्द्र यादव, डॉ. आर.एन. यादव, मास्टर श्याम लाल आर्य, अमित गुप्ता, सत्यवीर आर्य, डॉ. होशियार सिंह, किरणपाल आर्य, सुरेन्द्र पहलवान, जोगेन्द्र जाजनपुर, दीपक कथूरिया, बलराम आर्य, प्रवीण आर्य, डॉ. नरेश कौशिक, विजयपाल आर्य, पवन आर्य, धर्मपाल आर्य, वेदपाल अलेवा, मास्टर जगदीश, राजबीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण सिंह, जय भगवान, डॉ. राजेश आर्य, नफे सिंह आर्य, सतबीर आर्य, राजबीर मलिक, सुदामा आर्य, अशोक दांगी, मुकेश आर्य, शशि आर्या, एकता आर्या, प्रीति आर्या, पूजा आर्या, राज कुमारी आर्या, मोनिका आर्या, अंजू आर्या, निधि आर्या, पूनम कुंडू, जागेराम आर्य, रौनक आर्य, जोरा सिंह आर्य, विजेन्द्र बुरा, सुखदेव कालवा, अजीत पाल, नरेन्द्र खटकड़, साहिल आर्य, बंटी आर्य, योगेश आर्य, मनुदेव आर्य, देवेन्द्र सैनी, अनिल आर्य, सत्यप्रकाश आर्य, बलवंत आर्य, जयवीर मुकलान, बलराज मलिक, बिजेन्द्र मलिक, जगदीश सींवर, डॉ. राजवीर आदि प्रमुख हैं।

विशाल आर्य महासम्मेलन, खटकड़ टोल, जिला-जीन्द, हरियाणा की चित्रमय झलकियाँ

विशाल आर्य महासम्मेलन, खटकड़ टोल, जिला-जीन्द, हरियाणा की चित्रमय झलकियाँ

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर आयोजित विशाल आर्य महासम्मेलन, खटकड़ टोल, जिला–जीन्द (हरियाणा) में पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव संख्या – 1

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष में आयोजित हरियाणा प्रान्तीय विशाल आर्य महासम्मेलन खटकड़ टोल, जिला–जीन्द हरियाणा सरकार से मांग करता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस 12 फरवरी को अवकाश घोषित किया जाये अथवा महर्षि दयानन्द के बोध दिवस शिवरात्रि तथा निर्वाण दिवस दीपावली के अवकाश के साथ महर्षि दयानन्द बोध दिवस एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण शब्द जोड़ा जाये, क्योंकि इन दोनों ही पर्वों पर छुट्टी होती है, महर्षि का नाम जुड़ने से भी उनका संदेश जन–जन तक पहुंचाया जा सकता है। यहां यह भी आवश्यक है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की समाज सुधार एवं स्वतंत्रता आन्दोलन में अद्वितीय भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए उनकी स्मृतियों को स्थाई बनाये रखने के लिए हरियाणा प्रान्त में राज्य सरकार एक भव्य स्मारक बनाये।

प्रस्ताव संख्या – 2

यह विशाल महासम्मेलन हरियाणा सरकार से मांग करता है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी को सम्मान देते हुए सभी राजकीय कार्य, पत्र व्यवहार एवं शासकीय आदेश आदि हिन्दी में जारी किये जायें तथा सभी न्यायालयों में भी काम काज हिन्दी में प्रारम्भ किया जाये।

प्रस्ताव संख्या – 3

प्राचीन वैदिक संस्कृति, दर्शन एवं वैदिक ज्ञान संस्कृत के ग्रन्थों में उपलब्ध है। उस ज्ञान से अवगत होने तथा लाभान्वित होने के लिए संस्कृत का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः आर्य महासम्मेलन मांग करता है कि हरियाणा सरकार संस्कृत को अनिवार्य विषय के रूप में स्कूलों के पाठ्यक्रम में शामिल करे।

प्रस्ताव संख्या – 4

संस्कृति की रक्षा के लिए विशेष रूप से अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे गुरुकुलों के स्तर को ऊँचा उठाने एवं सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विशेष पैकेज तैयार करके गुरुकुलों की आर्थिक सहायता की जाये तथा विशेष अनुदान दिया जाये।

प्रस्ताव संख्या – 5

विशाल आर्य महासम्मेलन गम्भीरता के साथ अनुभव करता है कि इलेक्ट्रानिक एवं प्रिन्ट मीडिया के माध्यमों (टेलीविजन, गूगल अश्लील साहित्य आदि) से जिस तरह से अश्लीलता, नग्नता, कामुकता एवं उक्षृंखलता से युक्त सामग्री एवं विज्ञापन परोसे जा रहे हैं इससे नई पीढ़ी के बच्चे व नवयुवक बेहद प्रभावित हो रहे हैं। उन्हें जीवन के प्रारम्भिक काल से ही चरित्रहीनता की ओर धकेला जा रहा है तथा युवा होते–होते वे इस षड्यन्त्र का शिकार हो जाते हैं। अतः महासम्मेलन मांग करता है कि टेलीविजन पर प्रसारित होने वाली अश्लील एवं गन्दी फिल्मों तथा गूगल के माध्यम से परोसी जा रही पोर्नोग्राफी (यौन क्रियाएं) तथा ब्लू फिल्मों पर शीघ्रातिशीघ्र प्रतिबन्ध लगाया जाये।

प्रस्ताव संख्या – 6

समाज की मूल्यवान एवं स्वस्थ परम्पराओं तथा पारिवारिक व्यवस्थाओं को चुनौती दे रही सम गोत्र एवं सम लैंगिक शादियां तथा लिव–इन–रिलेशन शिप जैसी अनैतिक सम्बन्धों की मांग को यह आर्य महासम्मेलन समाज के भविष्य के लिए गम्भीर समस्या मानता है। अतः महासम्मेलन मांग करता है कि सम गोत्र एवं समलैंगिक शादियों को गैर–कानूनी घोषित करते हुए सख्त कानून बनाया जाये तथा बिना शादी सम्बन्ध स्थापित करना अवैध माना जाये। यह पूरे समाज की सुख–शांति व समृद्धि के लिए आवश्यक है।

प्रस्ताव संख्या – 7

हरियाणा के लिए एक कहावत प्रसिद्ध है ''देशों में देश हरियाणा जित दूध दही का खाणा'' किन्तु आज परिस्थितियाँ पूरी तरह विपरीत है। आज हरियाणा नशाखोरी में लिप्त है। स्थिति यहां तक बिगड़ चुकी है कि छोटी उम्र के बच्चे भी नशे की गिरफ्त में आते जा रहे हैं। पूरे प्रदेश में शराब एवं ड्रग्स (स्मैक, सुल्फा, गांजा, अफीम, भांग, धतूरा तथा नशे के इन्जेक्शन आदि) का प्रभाव सभी सीमाओं को लांघ रहा है। नशे से होने वाली मौतों, दुर्घटनाओं, मुकदमों तथा झगड़ों का आंकड़ा निरन्तर बढ़ता जा रहा है। सरकार का यह दायित्व है कि प्रदेश को नशामुक्त बनाने तथा खुशहाल बनाने के लिए पूर्ण नशाबन्दी लागू करें। आर्य समाज तथा अन्य संगठन जन–जागृति का कार्य करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। अतः महासम्मेलन सरकार से मांग करता है कि प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी एवं ड्रग्स पर प्रतिबन्ध लागू करे।

प्रस्ताव संख्या – 8

आर्य महासम्मेलन मांग करता है कि नारी के गौरव एवं सम्मान को सुरक्षित रखने के लिए यह आवश्यक है कि –

1. कन्या भ्रूण हत्या को पूर्णतया प्रतिबन्धित करने के लिए पी.एन.डी.टी. एक्ट के अतिरिक्त सख्त कानून बनाया जाये। कन्या भ्रूण हत्या में संलिप्त डॉक्टर एवं सम्बद्ध लोगों को सख्त सजा का प्रावधान कर दण्डित किया जाये।
2. घरेलू हिंसा, दहेज हत्या एवं दहेज के लिए प्रताड़ना दिन–प्रतिदिन महिलाओं पर बढ़ते जा रहे बलात्कार एवं अत्याचार तथा नारी जाति को भद्दे एवं अश्लील विज्ञापनों के द्वारा तिरस्कृत करने की प्रवृत्ति पर रोक लगाई जाये।

प्रस्ताव संख्या – 9

अन्नदाता किसान को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में राजाओं का राजा बताया है। किन्तु आज किसान की हालत बद से बदतर होती जा रही है। किसान तथा किसान के साथ जुड़े समस्त मेहनतकश मजदूर, कामगार, दुकानदार लकड़ी का, लोहे का, मिट्टी का काम करने वाले कारीगर सभी कृषि एवं कृषि आधारित अर्थव्यवस्था पर निर्भर हैं। अतः यह आवश्यक है कि किसान की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाया जाये। किसान आर्थिक रूप से सक्षम होगा, उसकी क्रय शक्ति बढ़ेगी, तो अन्य सभी वर्ग भी आर्थिक रूप से सबल होंगे। इसके लिए आवश्यक है कि किसान को सस्ते एवं उचित मूल्य पर बीज, खाद एवं मशीनरी उपलब्ध कराई जाये तथा उसकी कृषि उपज का लाभकारी मूल्य दिया जाये तथा स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशें लागू की जायें। मुख्य कृषि उत्पादों पर एम. एस.पी. लागू की जाये।

प्रस्ताव संख्या – 10

भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि एवं गौवंश का गहरा सम्बन्ध है। अतः यह आवश्यक है कि गौ–संवर्द्धन के लिए सरकार विशेष योजना तैयार करे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने गौ–कृषि आदि रक्षणी सभा बनाकर इस विषय की गम्भीरता को दर्शाया था। महर्षि जी ने गौ–करूणानिधि पुस्तिका में गाय के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। आर्य महासम्मेलन मांग करता है कि –

1. गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये।
2. गौरक्षा हेतु सम्पूर्ण देश में गौकसी के विरुद्ध कानून बनाया जाये।
3. गौ–पालन के लिए बेरोजगार युवकों को अनुदान एवं ब्याज रहित कर्ज दिया जाये।
4. प्रत्येक गाँव में सामलात एवं गौचर भूमि पर गौसंवर्द्धन केन्द्र स्थापित किये जायें।
5. गाय के नस्ल सुधार केन्द्र अधिक से अधिक खोले जायें।
6. गौ–संरखण हेतु प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय पार्क/अभयारण्य बनाये जायें।
7. गाय के गोबर, गौ–मूत्र का प्रयोग करते हुए जैविक खाद, कीटनाशक रसायन तैयार कये जायें।
8. गौशालाओं की व्यवस्था ठीक हो तथा उन्हें संचालन हेतु अनुदान प्रचुर मात्रा में प्रदान की जाये।
9. गाय पालने वाले किसानों के ट्यूबेल का बिल माफ किया जये। इसमें कम से कम दस गाय पालने की शर्त आवश्यक हो।
10. पंच गव्य तैयार करके अचार उद्योग में प्रयुक्त किया जाये।

प्रस्ताव संख्या – 11

आर्य महासम्मेलन केन्द्र सरकार से मांग करता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर :–

1. जेवर (अलीगढ़) का निर्माणाधीन अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नाम से घोषित किया जाये।
2. देश की राजधानी दिल्ली में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की स्मृति में एक राष्ट्रीय स्मारक संग्रहालय बनाया जाये जिसमें महर्षि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विषद् विवरण तथा स्वतंत्रता आन्दोलन में महर्षि दयानन्द एवं उनके अनुयायियों और आर्य समाज के ऐतिहासिक योगदान व भूमिका से सम्बन्धित सामग्री उपलब्ध हो।
3. महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म स्थान टंकारा एवं निर्वाण स्थली, भिनाय कोठी, अजमेर को विकसित करके अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक का रूप दिया जाये।
4. महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र संसद भवन में स्थापित किया जाये।
5. महर्षि दयानन्द सरस्वती ने धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड के विरुद्ध पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी। उन्होंने मूर्ति पूजा, मृतक श्राद्ध, अवतारवाद एवं विविध रूढ़ियों को अवैदिक बताते हुए अनेक शास्त्रार्थ किये थे। वर्तमान समय में भी यह आवश्यक है कि धर्म के क्षेत्र में बढ़ते जा रहे पाखण्ड तथा अन्धविश्वास के विरुद्ध जन–जागृति अभियान चलाया जाये। इसके लिए आर्य समाज की प्रत्येक इकाई को कार्य करना होगा। यह सम्मेलन निर्णय करता है कि हरियाणा के प्रत्येक गांव में आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों तथा आर्य युवक परिषद् एवं आर्य वीरदल की स्थापना की जायेंगी।

विशाल आर्य महासम्मेलन, खटकड़ टोल, जिला-जीन्द, हरियाणा की चित्रमय झलकियाँ

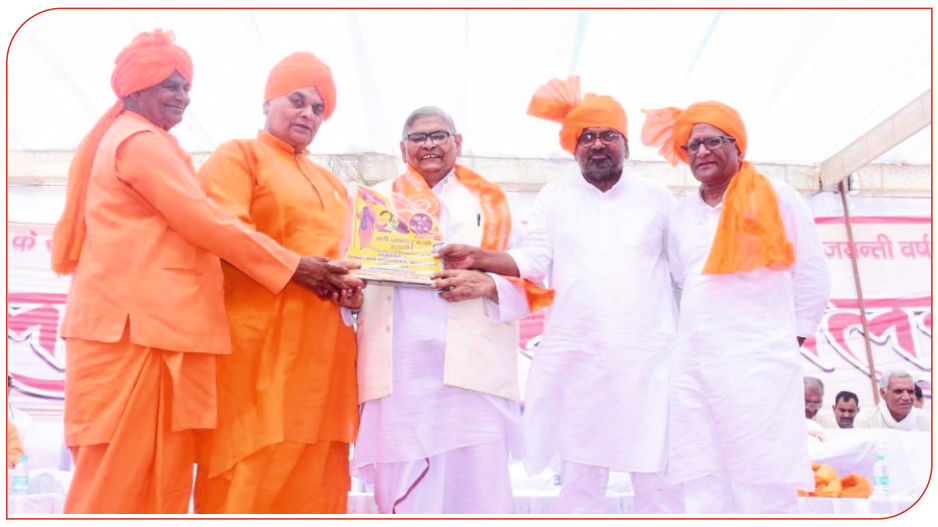

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-42415359, 23274771)

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज के भामाशाह ठा. विक्रम सिंह जी का 80वाँ जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया

आर्य रत्न ठाकुर विक्रम सिंह ने वैदिक सनातन संस्कृति की रक्षा में अतुलनीय योगदान दे रहे हैं – स्वामी रामदेव

नई दिल्ली। 20 सितम्बर, 2023 को तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में वैदिक विद्वान् ठा. विक्रम सिंह के जीवन के 80 वसंत पूर्ण होने के अवसर पर आयुष्काम यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसे डा. प्रियंवदा वेद भारती द्वारा सम्पन्न कराया गया। यज्ञ के उपरांत आर्ष गुरूकुल होशंगाबाद के आचार्य श्रद्धेय स्वामी ऋतस्पति जी द्वारा अपने आशीर्वचनों से ठा. विक्रम सिंह के लिए दीर्घजीवन, स्वस्थ जीवन एवं संस्कारित जीवन के लिए कामना की गई।

इस अवसर पर अभिनन्दन समारोह को सम्बोधित करते हुए योग गुरू स्वामी रामदेव जी ने उनके दीर्घायुष्य की कामना करते हुए वैदिक सनातन संस्कृति के केन्द्र आर्ष गुरूकुलों की उन्नति के लिए ठा. विक्रम सिंह द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता की प्रशंसा करते हुए इसे वैदिक सनातन संस्कृति की रक्षा में एक सराहनीय कदम बताया। स्वामी जी ने कहा कि उनका स्पष्ट मत है यदि गुरूकुलों की रक्षा होगी तभी सनातन संस्कृति भी बच पाएगी। इसलिए उन्होंने सभी उद्योगपतियों का आह्वान किया कि ठा. विक्रम सिंह की तरह वे भी गुरूकुलों की रक्षा के लिए आगे आएं। उन्हें आवश्यक आर्थिक सहयोग देकर गुरूकुलीय परम्परा को सुदृढ़ बनाने में अपना–अपना योगदान अवश्य देंवे।

अभिनन्दन समारोह के संरक्षक स्वामी आर्यवेश जी ने ठाकुर विक्रम सिंह को महर्षि दयानन्द का सच्चा अनुयायी बताते हुए कहा कि उन्होंने तथा उनके पारिवारिक सदस्यों ने अपना तन–मन–धन अर्थात् अपना सर्वस्व वैदिक सनातन संस्कृति के संरक्षण के लिए समर्पित किया हुआ है। आज हम सब उनके 80वें जन्मदिन पर इक्ट्ठा हुए हैं। हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे इसी प्रकार दिन–प्रतिदिन गुरुकुलों तथा अन्य संस्थाओं एवं आर्य समाज से सम्बन्धित भजनोपदेशकों एवं अन्य कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करते रहें जिससे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के मिशन को हम सब पूर्ण करने में सक्षम हो सकें। मैं उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य जीवन की कामना करते हुए उन्हें पूरे आर्य जगत की ओर से शुभकामनाएं देता हूँ।

इस अवसर पर एक अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन किया गया, जिसमें उनके द्वारा राष्ट्र एवं समाज हित में की गई सेवाओं को देखते हुए ठा. विक्रम सिंह को "आर्य राष्ट्र के पुरोधा" के रूप में उनके व्यक्तित्व को रेखांकित किया गया है। इस अभिनंदन ग्रंथ के विमोचन के अवसर पर श्री सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान, कोर कमेटी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, प्रो. विट्ठलराव आर्य मंत्री, कोर कमेटी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रसिद्ध उद्योगपति सुरेंद्र कुमार आर्य, एम.डी.एच. के अध्यक्ष श्री राजीव गुलाटी, श्री एस.के. शर्मा डायरेक्टर, डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी, हीरो ग्रुप के अध्यक्ष श्री योगेश मुंजाल, परोपकारिणी सभा के अध्यक्ष श्री सत्यानंद आर्य, राष्ट्रीय कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी, श्री धर्मपाल आर्य, दिल्ली, श्री विनय आर्य, श्री महावीर अग्रवाल जी, श्री कन्हैया लाल आर्य, डा. राकेश कुमार आर्य, श्री देवमुनि जी वानप्रस्थ, आचार्या सुमेधा, गुरूकुल चोटीपुरा, जैसे अनेक प्रसिद्ध आर्य नेता, संन्यासीगण व विद्वान उपस्थित रहे तथा सभी ने अपनी शुभकामनाएं ठा. विक्रम सिंह जी के दीर्घ–जीवन के लिए व्यक्त की।

अपनी शुभकामना व्यक्त करते हुए इस अवसर पर सुदर्शन न्यूज के अध्यक्ष श्री सुरेश चव्हाण ने परमात्मा से प्रार्थना की कि ठा. विक्रम सिंह का शताब्दी वर्ष का अभिनंदन समारोह भारत मंडपम् में मनाने का अवसर प्राप्त हो। साथ ही उन्होंने कहा कि आर्य समाज के विद्वानों में ही ऐसी क्षमता है कि वे सनातन विरोधियों को तार्किक रूप से परास्त कर सकते हैं। यह कार्यक्रम वेद निधि स्थापना समारोह के रूप में मनाया गया था, जिसके अंतर्गत वैदिक विद्वान ठा. विक्रम सिंह का सम्मान समारोह आयोजित किया गया था।

इस कार्यक्रम के मुख्य संयोजक डा. आनंद कुमार, पूर्व वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, संयोजक प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा. धर्मेन्द्र शास्त्री व डा. ज्वलंत कुमार शास्त्री रहे। इसके अतिरिक्त श्री देवेश प्रकाश, सहसंयोजक, श्री मनोज गुलाटी, दानवीर विद्यालंकार, श्री चंद्रमौली शर्मा, डा. गजराज सिंह, श्री बृहस्पति आर्य, श्री लाल सिंह कुशवाहा, श्री प्रशांत कुमार, आचार्य दुष्यंत, श्री जयवीर योगाचार्य आदि ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई।

कार्यक्रम भव्यता के वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अन्त में सभी संन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों, आचार्यों एवं कार्यकर्ताओं को सम्मान स्वरूप भेंट राशि प्रदान करके सम्मानित किया गया तथा इस अवसर पर सुन्दर भोजन की व्यवस्था की गई थी जिसे सभी महानुभावों ने ग्रहण किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-42415359, 23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।